धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

फरवरी 2010

* मनुष्य हिंसक है।
* मां का वातसल्य
* शहीद की मां
* माँ की डायरी
* परिवार में बुज़रगों की भूमिका

बदला अदा कैसे करूं मैं मां तेरे अहसान का
अहसानमन्द हूं ता उमर मैं मां तेरे अहसान का

मेरे लिए थी बन गई तू मां मेरी आहन रुबा
गम न किया मेरी खातिर तूने अपनी जान का

खून को अपने बनाया वास्ते मेरे है शीर
जग में नहीं नामो निशां मां तुझसी मेहरबान का

मानी न मैंने एक भी आकर कभी इसरार में
जुल्म को भी खेल समझा तूने मुझ अनजान का

मौजूद थी हर चीज़ मेरी सामने शामो सहर
कोई हठ खाली गया न आज तक नादान का

थी खुशी इस पर भी तुझको जो किया था शोरोगुल
न किया कोई गिला मुझसे किसी नुकसान का

बैठी रही तू रात दिन लेकर मुझे आगोश में
करवटों पर भी ख्याल रखा तूने मुझ अनजान का

खुद रही फाका मगर मुझको पिलाया है शीर
कर दिया रुतबा अता तूने मुझे इन्सान का

वक्ते पैदायश के तेरी जिन्दगी दुश्वार थी
हो गया छू भर था मां बचना भी तेरी जान का

बख्श दो मेरे गुनाह है शाद की यह इल्तज़ा
फरशी परनाम है मां तेरे कदमों में हर भगवान का।

धर्म जीवन

खण्ड 22 अंक 2

फरवरी 2010

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

मनुष्य हिंसक है।

मनुष्य पशुओं से विकसित हुआ है। बेशक मनुष्य को पैदा हुए लाखों वर्ष हो गए हैं, परन्तु अभी तक भी वह अपनी पशुवृत्ति से उभर नहीं उठा सका। न केवल वह पशुवृत्ति को छोड़ नहीं सका, उल्टा पशुओं से भी बढ़कर नीच सुखों का गुलाम होने के लिए बेबस है।

जीव हत्या बहुत घृणित अहिंसा है। जैन मत के मुखिया बहुत महान थे जिन्होंने आज से हज़ारों वर्ष पहले, मनुष्य को उसके प्रति गहराई से जाग्रित किया। अहिंसा के प्रति एक नई चेतना पैदा करने का प्रयत्न किया।

मनुष्य की हिंसक प्रकृति का शिकार केवल जीव जन्तु ही नहीं, इसका दायरा बहुत विस्तृत है। मनुष्य जीव हत्या न करके भी हिंसक रहता है। जैसे जंगलों में जहां अधिक शक्तिशाली जानवर रहते हों, वहां अपने से निर्बलों का मारने, काटने और खाने का काम होता है, उसे जंगल का कानून कहते हैं,

Kill whom you can, take what you can. उसी प्रकार मनुष्य समाज में, पर सुख, पर आराम, पर शान्ति, पर स्वास्थ्य, पर मान, सन्मान और पर अधिकारों का हनन करके अपहरण की क्रियाएं जोरों पर होती हैं।

जिस प्रकार किसी निर्दोष को काटकर किसी सांप को पता नहीं लगता कि उसने क्या कर दिया, किस प्रकार एक-एक बहुमूल्य जीवन समाप्त कर दिया, किसी निर्दोष का सुहाग छीन लिया, उसकी कमाई का एक मात्र सहारा, उसकी खुशीयों का स्त्रोत, उसका रक्षक छीन लिया है। उसको दुखों और गमों के सागर में घुल-घुल कर मरने के लिए छोड़ दिया है। दो या तीन मासूम बच्चों को यतीम बनाकर दुख, अनादर और अपमान सहने के लिए मजबूर कर दिया है। उसके बूढ़े मां बाप को जीते जी मार दिया है।

ऐसे एहसास से एक-एक सांप वा हिंसक जानवर पूर्ण रूप से अनभिज्ञ होता है। उसी प्रकार मनुष्य भी अपने हाथों हो रहे दूसरें मनुष्यों के सुख, मान वा अधिकारों को हनन करने पर बिल्कुल अनभिज्ञ रहता है।

निर्दयता, हिंसा के प्रति अन्धकार पैदा

करती है, फिर किसी का दुख, हानि और उसके प्रति अन्याय दिखाई नहीं देता।

मानव जगत में अंह, हिंसा और स्वार्थ का राज है। अंह के नशे की मस्ती, दुसरों के दुख - सुख के प्रति मनुष्य को अन्धा और कठोर बना देती है। और मनुष्य जगत की बदकिस्मती है कि प्रत्येक मनुष्य अंह का शिकार है, मनुष्य और अंह का अकाट्य सम्बन्ध है। अंह से घमंड, नीच घृणा, ईर्षा द्वेष, स्वार्थ वा स्वेच्छाचारिता की उपज होनी अनिवार्य है। और ज्यों - ज्यों यह भाव बढ़ते जाते हैं, मनुष्य दूसरों के प्रति अन्धा वा कठोर से कठोर बनता जाता है। इसीलिए परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने फरमाया है :-

मनुष्य सब पागल हैं, जो पागल खाने में बन्द हैं, वह तो पागल हैं ही, जो बन्द नहीं वह भी पागल है, केवल डिगरियों का फर्क है।

यह कहानी किसी एक परिवार वा संस्था, वा देश की नहीं, यह तो विश्वव्यापी समस्या है। घर - घर की कहानी है, इसी कारण क्या परिवार, क्या संस्थाएं, क्या देश वा विदेश सब नर्क की दास्तां सुनाते नज़र आते हैं। कलह कलेश की रौ बह रही है। सब सम्बन्धों में नर्क पैदा करने का मुख्य कारण मनुष्य का अंह और उसकी उपज हिंसा है। अंह के अनुरागी मनुष्य के लिए बेखुद होना, बौखलाना और विस्फोटक होना अनिवार्य है। दूसरों पर चीखना, चिल्लाना, उन्हें अपमानित करना, ऊंचा बोलना, गाली गलौच करना, अपशब्द कहना, अशिष्ट होना, अश्लील भाषा का प्रयोग करना, यहां तक कि हाथ उठाना, पीटना आदि स्वभाविक हो जाता है।

उपरोक्त परिस्थितियों में मनुष्य दूसरों का सम्मान, शान्ति स्वास्थ्य, आयु, सुख वा उनके उचित अधिकार का हनन करके हिंसक बनता है।

अहं मनुष्य को वहशी बना देता है। इसका अधिकार मनुष्य को अपनी रुचि के विरुद्ध किसी का व्यवहार पाकर, उसको शत्रु देखने के लिए मजबूर कर देता है। प्यारे से प्यारे सम्बन्धी के प्रति भी कठोरता पूर्ण व्यवहार करने के लिए विवश कर देता है।

अंह वहां पर अपना प्रकाश अधिक पाता है, जहां यह नज़र आए कि कोई जन आगे से उसे मुंह तोड़ जवाब देने वाला नहीं। कोई गरीब, कमजोर, छोटा, मताहत, इसके अधिक शिकार होते हैं। बच्चे, नौकर, पत्नियां, निरीह पशु अधिकतर इस अनर्थ के शिकार देखे जाते हैं।

एक नौजवान बाप ने अपने दो छोटे - छोटे बच्चों को आम चूसने के लिए दिए और उन्हें बाथरूम में कपड़े उतारकर बिठा दिया, ताकि वह कपड़े गन्दे न करें। थोड़ी देर में वह बाथरूम छोड़कर बैडरूम में आ गए, और जब बाप ने उन्हें आम के रस से लथपथ देखा, तो स्वभाविक बाप के स्वाभिमान पर चोट लगी कि मेरे बच्चे इतनी भद्दी शक्ल में? जैसे वह अपने मन में कह रहा हो कि मैं इतना महान और मेरे बच्चे इस मैली कुचैली हालत में, ऐसे में उसके भीतर नीच घृणा भड़क उठी, अपने वह चन्द मिन्ट पहले प्यारे लगने वाले बच्चे बहुत घटिया नज़र आने लगे, उनकी शक्ल देखना नागवार गुजरा और उन मासूम और निर्दोष बच्चों के थप्पड़ लगा दिए, वह गिर गए, उनकी आम खाने की खुशी काफूर हो गई, वह रोने चिल्लाने लगे, थोड़ी देर में हंसता खेलता घर नर्क बन गया। बच्चे कुम्हला गए।

एक अंहकारी बाप को बच्चों की बेबसी, भोलेपन का एहसास खत्म हो गया। वह अपनी इच्छा का गुलाम बौखला गया। बच्चों के सुख, शान्ति, चैन उनके मान सम्मान का अपहरण उसको कुछ दिखाई नहीं दिया। बच्चे खराब और अपना आप बिल्कुल ठीक नज़र आने लगा। हिंसक मनुष्य अपनी हिंसा की क्रियाओं के प्रति बिल्कुल अनजान होता है। सारा दोष दूसरों का दिखाई देता है।

एक अधिकारी की बुर्ज़ुग नानी उसके घर आई हुई थी। उसकी पत्नी और अन्य स्त्रियां गर्म पानी से उसको स्नान करवा रही थी और पटवारी बीच में बोल-बोलकर विघ्नकारी बन रहा था। पत्नी ने कह दिया कि उसे उनकी ओर नहीं देखना चाहिए और बातों में नहीं उलझाना चाहिए, बस फिर क्या था, उसके अंह पर चोट लगी, वह बौख़ला गया, नीच घृणा से भर गया। पल भर में पत्नी, जो उसी की नानी की सेवा कर रही थी, अपनी शत्रु नज़र आने लगी। बेशक शारीरिक लिहाज़ से वह बहुत पतला दुबला था, परन्तु वह पत्नी की ओर लपका उसे बालों से पकड़ लिया, उसकी पिटाई शुरु कर दी। उसका ध्यान अपनी करतूत की ओर नहीं गया, उल्टा उस बेकसूर पर जुल्म ढा दिया। इससे उसने अपनी पत्नी के सुख शान्ति, सम्मान पर डाका डाला। परन्तु दोष पत्नी का ही दिखाई दिया।

यही व्यवहार एक-एक अफसर अपने अधीन काम करने वालों पर करते हैं। घर-घर में यह नर्क है। मानव समाज वहशी, दरिन्दों की समाज बन कर रह गई है। धर्म समाजों तक को इस अहंकार ने डस लिया है। परन्तु प्रत्येक मनुष्य अपने इन व्यवहारों से पूर्ण रूप से अनजान रहता है, वह अपने आपको ठीक, पर दूसरों को गल्त समझता रहता है। उसको अपने अंह के शिकार हुए दूसरे मनुष्यों की चीखो पुकार सुनाई नहीं देती।

महावीर स्वामी ने हिंसा के रूप को देखा और उसे बहुत सूक्ष्म ढंग से देखा और जीव हत्या के प्रति मानव जगत को जाग्रित किया, परन्तु परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने नेचर के विकास क्रम में प्राप्त अपनी अद्भुत ज्योति में मानव स्वभाव में अंह प्रियता को देखा, मनुष्य को अपना असली रुप दिखाया। और पापों से मुक्त करने के साथ-साथ उन्होंने अंह मुक्त करने का भी बीड़ा उठाया। एक-एक जन के थोड़ा सा भी अंह मुक्त होने से किस प्रकार दूसरों का मान सम्मान, सुख शान्ति सुरक्षित हो जाती है, ऐसी उदाहरणें उन्होंने अपने शिष्यों में पैदा की।

एक-एक उदण्ड वा माता पिता को सताने, तड़पाने वाला बच्चा अपने माता पिता के उपकारों को देखने, अपनी उदण्डता को देखने और माता पिता के लिए सेवाकारी होने के योग्य बना दिया। एक-एक अहंकारी पति को अपने दुर्वव्यहारों के लिए पत्नी के पैरों में सिर रखकर क्षमा मांगने के लिए मजबूर कर दिया। एक-एक सरदार को अपने एक-एक मामूली नौकर से क्षमा-याचना करने की उदाहरण पैदा कर दी। इस संसार में स्वर्ग की झड़ी लगा दी। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी को अहं मुक्ति के लगातार साधनों में प्रवृत्त कर दिया और अहं अनुरागी मनुष्यों के लिए वह एक रोशनी का मिनार बन गए। काश! हम भी पूजनीय भगवान की रोशनी पाकर अपने अहं को देखने वा उससे मुक्ति पाने के साधनों में प्रवृत्त हो सकें।

बलदेव सिंह

शाम का लैक्चर – 4.00 बजे

सभापति – श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

वक्ता – डॉ. विनोद जी खेड़ा

विषय :– इन्सान का सबसे बड़ा दुश्मन कौन और उसे कैसे हटाएं? भजन के गान के बाद सभापति जी ने वक्ता का बहुत सुन्दर शब्दों में परिचय करवाया और माननीय वक्ता को भाषण देने के लिए आमंत्रित किया। हाल श्रोतागण से खचाखच भरा हुआ था। वक्ता ने अपने ही अन्दाज में लैक्चर का आरम्भ किया :-

सर्वप्रथम उन्होंने इन्सान की परिभाषा पर चर्चा की। वक्ता ने पहले उपस्थित जनों से प्रश्न किया कि क्या मैं विनोद खेड़ा हूँ? नहीं, यह केवल मेरा नाम है, असल में मैं इन्सान हूं।

भौतिक शरीर और शक्तिमय आत्मा से बने हुए अस्तित्व को इन्सान कहते हैं।

मनुष्य का दुश्मन भी वही हो सकता है, जो उसे हानि पहुंचाए।

फिर वक्ता ने प्रश्न किए कि मनुष्य को कौन चलाता है, विचार क्या है?

हमारे से अच्छी वा बुरी क्रियाएं कौन करवाता है।

मनुष्य को दो प्रकार की शक्तियां चलाती हैं।

1. सुखों की प्रति आकर्षण
2. दुखों के प्रति विकर्षण

अलग-अलग सुख के प्रति आकर्षण शक्ति को भाव शक्ति भी कह सकते हैं, जो बढ़ते-बढ़ते गुलामी का रूप धारण कर लेती है, तब हम इन्हें सुख अनुराग कह देते हैं।

किसी ने ठीक कहा है :-

हमारे विचार और भाव शक्तियां वह रंग हैं, जो हमारे अस्तित्व को paint करते हैं। इन भाव शक्तियों का अध्ययन हमारे लिए शिक्षा प्रद है। इनसे होने वाली हानियों के कुछ उदाहरण पेश किए। जार्ज बरनार्ड शाह, महान लेखक ने कहा है :-

"graves of human beings are dug in their kitchen"

स्वाद में सुख के आकर्षण बढ़ा लेने से, हम अपने स्वस्थ्य की हानि करते हैं। बलात्कार क्यों होते हैं? छोटे-छोटे बच्चों पर अत्याचार क्यों होते हैं? शराब, ड्रग्स, ego, धन के अनुराग की गुलामी बहुत हानि प्रद परिणाम पैदा करते हैं। उसके उदाहरण पेश किए गए कि किस प्रकार नीच शक्तियां सम्बन्धों में कड़वाहट भरती हैं, मनुष्य स्वयं भी नाश को प्राप्त होता है और दूसरों की भी हानि करता है।

मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन उसके नीच सुख अनुराग हैं, जो उसे अपनी कमियों को देखने नहीं देते। विकास के सब मार्ग बन्द हो जाते हैं।

दूसरी सच्चाई यह है कि हम अपने वातावरण से प्रभावित होते हैं, और दूसरों को भी प्रभावित करते हैं। उदाहरण देकर स्पष्ट किया कि किस प्रकार एक चील चूजों में रहकर उड़ना ही भूल गई थी।

अच्छी-अच्छी योग्यताएं बुरे वातावरण में नष्ट हो जाती हैं। अब आगे महत्वपूर्ण प्रश्न है कि इन दुश्मनों को कैसे परास्त करें?

धर्मो के बताए मार्ग पर चलकर दुनियां बद

से बद्तर बनती चली जा रही है।

धर्मो द्वारा बताए गए मार्ग क्यों फेल हैं?

इसके उत्तर में वक्ता ने बताया :-

1. हमारी नीच सुखों के प्रति आकर्षण वाली भाव शक्तियों के दिखाने में।
2. उनके भयानक और बर्बाद करने वाले रूप को हृदयों पर प्रदर्शित करने में
3. उन नीच भाव शक्तियों पर ब्रेक लगाने में
4. किसी भी दुश्मन नीच अनुराग शक्ति से मनुष्य को मुक्ति दिलाने में
5. उच्च सुखों के लिए आकर्षण पैदा करने में

यही कारण है कि धर्मो की भरमार है, परन्तु पाप, मिथ्या दिन पर दिन बढ़ रहे हैं।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा जिनका आर्विभाव इस पृथ्वी की उच्चतम घटना है, उन्होंने अपने देव प्रभावों से उपरोक्त काम किया है। उनकी विज्ञान मूलक शिक्षा के अनुसार सात्विक भाव शक्तियों अर्थात्, श्रद्धा, कृतज्ञता, सहानुभूति, अभाव निवारण जैसे भाव पैदा होने से मानव जीवन सुगन्धित होते हैं।

नीच भावों से मुक्ति पाना और उच्च भाव विकसित करने कैसे सम्भव हो सकते हैं?

यह अत्यन्त कठिन और आश्चर्यजनक काम परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने practical रूप में कर दिखाया है। इसके जीवन्त उदाहरण उनकी धर्म समाज में उपलब्ध है।

श्रीमान नौध सिंह जी, जो निकृष्ट जीवन बिता रहे थे, जुआ खेलना, शराब पीना, मासाहारी, अपनी नेक पत्नी पर अत्याचार करने वाले, ऐसे प्रभावों को पाकर सुनहरा, शानदार जीवन व्यतीत करके गए।

उपकारियों के उपकारों को इस कदर देखा कि उनके कान को ठीक करने के इबज़ में डाक्टर के साहिब को 2 अंगूठीयां भेंट कर दी और धन्य-धन्य अनुभव किया।

फिर एक ईष्यावान स्त्री का उदाहरण दिया, जिसने अपनी देवरानी का सन्दूक वा कपड़े जला दिए थे, ऐसे प्रभावों में आकर खुद मेहनत करके सन्दूक लिया, कपड़ों से भरा और अपनी देवरानी को भेंट करके धन्य-धन्य हुई।

बर्बाद होते हुए जीवन कैसे देव प्रभावों में आकर बचते हैं, और हानिकारक होने से बचते हैं, उसका वर्णन किया।

फिर इस कामना के साथ कि हम अपने इर्द-गिर्द के दूषित वातावरण से बच सकें और देवात्मा के प्रभाव पा सकें और अपने जीवन बचा सकें।

अन्त में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने खेड़ा साहिब की शानदार लैक्चर के लिए प्रशंसा की और उनका धन्यवाद किया। चार बार जय ध्वनि करके सभा समाप्त हो गई।

मंत्री देव धर्म ने अगले दिन का प्रोग्राम बताया।

4.12.2009, पहली सभा 8.30 बजे, सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

विषय : नये सेवकों का ग्रहण

पहले एक भजन का गान किया गया, उसके बाद परम पूजनीय भगवान देवात्मा का छवि द्वारा अर्चन किया गया, उसके बाद देव स्तोत्र का

गान और व्याख्या की गई। सभापति जी ने सहाय प्रार्थना की।

उसके बाद सभापति जी ने 2 नये जनों को, जिन्हें सेवकी में ग्रहण करना था, सम्बोधन करके बताया।

1. श्रीमान हरिन्दर सिंह जी मान, (महिमा सवाई भटिंडा)

2. श्रीमान संजय जी जैन (मोदीपुरम, मेरठ)

उक्त दोनों जनों का सभापति जी ने और श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सुन्दर परिचय करवाया और बताया गया कि हरिन्दर सिंह जी मान एक साल से सब नशों और मांसाहार आदि से पिछले महोत्सव से प्रभावित होकर विरत हो चुके हैं। संजय जी पहले ही सब पापों से विरत हैं।

फिर सभापति जी ने सेवकी की चारों प्रकार की प्रतिज्ञाओं की सब हाजरीन को समझाने के लिए बड़ी सुन्दर व्याख्या की। प्रतिज्ञाएं करवाते समय पुराने सेवकों और सेविकाओं को भी साथ-साथ सचेत करते रहे। बड़ा अच्छा वातावरण बनता रहा।

प्रतिज्ञाओं के पश्चात नये सेवकों को ढेर सारे जनों ने सम्मान देने के लिए फूलों के हारों से लाद दिया और इस खुशी में सबने विशेषकर डॉ. विनोद खेड़ा जी ने बहुत अच्छा दान दिया। सेवक बनने के महा अधिकार के सम्बन्ध में सुन्दर भजन का भी गान किया गया।

हम कितने ईमानदार हैं- - - - ?

जरा सोचिए! विदेश से अपने देश की तुलना करते समय क्या हम यह सोचते हैं कि हमने अपने देश की प्रगति के लिए क्या किया है?

मैं अपने एक परिचित के यहां बधाई देने गई थी। कारण था पति-पत्नी दोनों इंगलैंड में रह रहे अपने बेटे के घर एक महीना बिताकर आए थे। जब वे लौटकर आए, तो वे वहां की सड़कों, ट्रैफिक व्यवस्था, सफाई, भव्यता, संपन्नता और अनुशासन की बहुत उत्साहपूर्वक विस्तार से प्रशंसा करते नहीं थक रहे थे। उनका कथन था-'इंडिया को इंग्लैंड बनने में तो सालों लग जाएंगे।' मैं चुपचाप सुन रही थी। फिर मैंने उनकी बेटी के विषय में पूछा, जिसकी शिक्षिका के रूप में अभी-अभी पोस्टिंग हुई थी। उन्होंने जवाब दिया-'इंटीरियर गांव में चेकिंग का डर नहीं होता। इसलिए हफ्ते में बस एक बार चली जाती है।' उनका जवाब सुनकर मैं सोचने को मज़बूर हो गई कि दूसरे देशों की प्रगति का वर्णन करने वाले स्वयं अपने देश के पुनर्निमाण के लिए क्या कर रहे हैं? इंग्लैंड, अमैरिका की प्रगति की भारत से तुलना करने वाले भारतीय स्वयं देश के प्रति कितने ईमानदार है, क्या आपने कभी सोचा है?

मां का वातसल्य

जीवन में मातृत्व सुख एक दैविए वरदान है। मातृत्व सुख ही स्त्री को संपूर्ण स्त्री का दर्जा देता है। हम अपने अनुभव से जानते है कि जब कोई स्त्री मां नहीं बन सकती, तो वह अपने आपको कितना अधूरा समझती है। प्रकृति ने स्त्री को ही यह संरचना का अधिकार देकर महान आत्माओं का रचिता बनाया है।

एक एक स्त्री बच्चे गर्भ में स्थापित होते ही उस से अटूट सम्बन्ध में बन्ध जाती है, ज्यों ज्यों समय बीतता है, वैसे-वैसे मां पेट में पल रहे बच्चे की हर हरकत से रोमान्चित होती रहती है, वह मन ही मन में उससे बातें करती है। अपने भीतर पल रही उस नई जिन्दगी का ख्याल ही उसके जीवन में नई उमंग और आशाओं का संचार करने लगता है। एक स्वस्थ बच्चे को जन्म देने के लिए अच्छे विचारों और अच्छे संस्कारों की नींव रखने में वह अपना अधिकतर समय गुजारती है। जैसे जैसे समय बीतता है उस नन्हीं जान के साथ मां का रिश्ता गहरा होता जाता है। एक औरत के लिए मातृत्व सुख अद्‌भुत और अलौकिक होता है। वह बेसब्री से उस समय का इन्तज़ार करती है जब वह बच्चा उसकी गोद में आएगा। आखिर ज़िन्दगी और मौत से संघर्ष करके वह नवजीवन को जन्म देती है। 9 महीने जिसे अपने खून की एक एक बूंद से सींचा था, उसकी एक एक धड़कन को सुना था, पुरूष के लिए इसकी अनुभूति मात्र भी सम्भव नहीं, जो एक मां अनुभव करती है।

इतना अटूट सम्बन्ध होने के कारण ही मां बच्चे के लिए हर सम्भव कुर्बानी कर सकती है। पिता न रहे तो मां मेहनत मजदूरी करके भी बच्चों को पाल लेती है, परन्तु पिता धनी होकर भी बच्चों को मां का प्यार नहीं दे सकता। मां का आंचल खुले आसमान की तरह होता है, एक जगह लिखा था कि एक घोंसले में आई चिड़िया से चूज़े ने पूछा कि 'मां, आकाश कितना बड़ा है।' मां ने चूज़े को अपने पंखों के नीचे समेटते हुए कहा कि "सो जाओ, इन पंखों से छोटा है।" वास्तव में मां का आंचल बच्चों को हर दुख, कष्ट से बचाने की क्षमता रखता है।

मां, महान अनुभूतियों की जन्म दाता है, मां की कोख़ से ही महान क्रान्तियों का जन्म हुआ है। सफलतम लोगों की रोल माडल मां ही रही है। कुछ सफलतम लोगों ने कुछ इस प्रकार मां के विषय में अपने भावों का प्रकाश किया है :-

चार्लीचैपलिन ने लिखा है :- "मुझे यह लगता है कि मेरी मां अब तक की सबसे शानदार महिला थी। इस दुनियां को बदलने वाले बहुत से लोगों से मैं मिला हूं- लेकिन मेरी मां से परिपक्व सोच रखने वाली महिला मुझे आज तक नहीं मिली। मैं कितना भी वापिस करूं, उनकी तरफ से मेरी ओर उनका कर्ज़ा बाकी ही रहेगा।"

माँ त्याग की मूर्ति होती है, वह बिना दिखाए त्याग करती है। यदि घर में चार मैंबर हैं और उदाहरणत: तीन सेब हैं, तो मां पहले ही घोषणा कर देगी कि उसे सेब खाने का बिल्कुल मन नहीं। यह बात हम मां के हर व्यवहार में देख सकते हैं।

जार्ज वशिंगटन की मां की शिक्षा बहुत सीमित थी, परन्तु वह विलक्षण बुद्धि की स्वामिनी थी। ब्रिटिश नेवी उस समय दुनियां की सबसे शक्तिशाली सैनिक प्रणाली थी, इस सेना का हिस्सा बनना बहुत गौरव की बात माना जाता था और उस समय जार्ज ने इस नेवी में जाने का मन बनाया। सामान बांध लिया, लेकिन मां ने इजाज़त देने से बिल्कुल इन्कार कर दिया और कहा कि इससे जार्ज का सम्पर्क अपने लोगों से बिल्कुल टूट जाएगा। एक लेखक ने लिखा है कि मेरी बाल वशिंगटन (जार्ज वशिंगटन की मां) का यह फैसला समुचित मानवता पर हमेशा एक कर्ज़ की तरह रहेगा। आगे चलकर जार्ज ने अमरीकियों की दुनियां ही बदल दी।

उसने महानता के जो मापदण्ड स्थापित किए, वह एक महान मां के बिना असम्भव थे। मां का प्रभाव जार्ज पर खज़ाने की तरह था। जब तक वह जिन्दा रहे उन्होंने मां की याद को सहेजे रखा। मां को अपने इस दुनियां से जाने से पहले यह सन्तोष था कि उसके दूध ने कमाल दिखाया और उसके संघर्ष ने बेटे को जो नैतिकता का पाठ पढ़ाया, उससे वह महानतम नेताओं में गिना जाता है।

परन्तु साधारणत: ऐसी त्याग की मूर्ति, बच्चों और परिवार के प्रति समर्पित मां का सत्कार बहुत कम घरों में होता। सत्कार तो दूर उसे बहुत हालत में अपमान के घूंट पीने पड़ते हैं। कोई धर्म कोई पूजा पाठ मां के रूप को नहीं दिखाता, परन्तु परम पूजनीय भगवान देवात्मा ऐसी लासानी ज्योति लेकर आए हैं, जिसमें मां का रूप कृतघ्न बच्चों ने भी देखा। जिनके हाथों जो माता पिता दुखी थे, उन बच्चों ने श्रवण कुमार का दर्जा पाया है। एक-एक जन जिसने विधवा मां को पूर्ण रूप से Neglect किया हुआ था। वह रात दिन बच्चों के लिए कुर्बान हो रही थी, परन्तु उसके उपकारी रूप से पूर्ण अन्धे बच्चों के हाथों से नाला थी। ऐसे बच्चों को बदल कर उन्हें माता के चरणों में झुका दिया और सदा के लिए मां के भक्त बना दिया।

ऐसी अनगिणत उदाहरणें देवात्मा गुरु के देव प्रभावों ने पैदा की हैं। घरों के नर्क को दूर करने के लिए, माता पिता के प्रति कृतज्ञ बनाने के लिए, झूठे अंहकार, स्वेच्छाचारिता से निकाल कर सच्ची सेवा करने के योग्य बनाने के लिए उनके प्रभावों की प्रत्येक परिवार को अतिशय अवश्यकता है। जिन-जिन घरों में ऐसे प्रभाव पहुंचे हैं, वह घर स्वर्ग में परिवर्तित हो गए हैं और प्रकार पुकार कर कहते हैं कि यदि स्वर्ग देखना है, तो हमारे घर में देखो। यह पूजनीय भगवान की ही अपार कृपा है, जिनकी शिक्षा पाकर ही यह क्रिश्में सम्भव हुए हैं। आजकल माता पिता के सम्बन्ध में विशेष साधनों के दिनों में हम सब उनके प्रभावों को पाने के अधिकारी बन सकें और माता पिता के उपकारों, उनके गुणों को देखने के कुछ न कुछ योग्य हो सकें, यही हमारी कामना है।

सुरजीत बराड़

शहीद की मां

एक अफ्रीकी कहावत है कि वे हाथ जो पालना झुलाते हैं दरअसल वही हाथ राष्ट्रों पर शासन करते हैं और भाग्य का निर्माण करते हैं। हिन्दुस्तान ऐसी माताओं की कहानियों से अटा पड़ा है। इनके नाम गुम चुके हैं और आज खोजने पर भी जिजीविषा की कहानियों में उनका नाम तक नहीं मिलता। ऐसी ही माताओं में एक नाम रामप्रसाद बिस्मिल की मां का भी शुमार है। किसी भी दस्तावेज में इस महान महिला के नाम का उल्लेख नहीं हैं। रामप्रसाद बिस्मिल के बाजुओं को जोर देने वाली माता ने रामप्रसाद का आखिरी समय तक साथ दिया। इस महान व्यक्ति की माता ने राम प्रसाद को बनाने का काम किया था। आदमी वही बनता है जो उसकी मां उसे बनाती है। ग्यारह वर्ष की कम उम्र में बिस्मिल की मां का विवाह पंडित मुरलीधर के साथ सम्पन्न हुआ। बिस्मिल की मां अशिक्षित थी, लेकिन दुनियावी समझ उनमें काफी विकसित थी। बिस्मिल के परिवार में कन्यावध का प्रचलन था। बिस्मिल की मां ने इस प्रथा का विरोध किया और अपनी कन्याओं की सुरक्षा के लिए दीवार बन कर खड़ी हो गई। पंडित मुरलीधर के परिवार में ऐसा पहली बार हो रहा था कि कन्या के जन्म के बाद उसका पोषण भी किया जा रहा था। बिस्मिल से पहले उनके एक भाई इस दुनिया में आ चुके थे। अब बिस्मिल की बारी थी। एक और बेटे ने घर की खुशियों को बढ़ा दिया था। इससे पहले बिस्मिल के एक और भाई हुए थे, लेकिन वे ज्यादा दिन जीवित न रह सके। बिस्मिल की मां ने पांच पुत्रियों और तीनों पुत्रों को जन्म दिया। जिनमें से दो बेटियों और दो बेटों के खोने का दर्द बिस्मिल की मां को झेलना पड़ा। अपने इतने बच्चों को खोने के बाद मां बिस्मिल को लेकर सुरक्षात्मक हो गई थी। बिस्मिल भी शुरुआती दिनों में काफी बीमार रहते थे। अगर बिस्मिल की मां की तुलना की जाए तो वे गोर्की के उपन्यास की मां के किरदार से काफी मेल खाती थी। उन्होंने अपने बेटे का हमेशा साथ दिया। वे हमेशा एक बात को लेकर एकदम स्पष्ट रही कि उनका बेटा जो भी कर रहा है, वह ठीक है। मां वैसे तो अशिक्षित थी, लेकिन उनमें पढ़ने की इच्छा प्रबल थी। अथक प्रयासों के बाद वे हिंदी पढ़ना और लिखना सीख ही गई। ऐसा उस जमाने में करना वाकई हिम्मत वाला काम था। मां काफी धार्मिक प्रवृत्ति की थी और धर्म-कर्म में उनकी अथाह श्रद्धा थी, जबकि बिस्मिल आर्यसमाजी हो गए। मां के सामने प्रश्न था कि वे अपने ईश्वर को चुने या बेटे को। एक खालिस मां ने हमेशा की तरह बेटे का पक्ष लिया और ईश्वर मां से हार गए। अछूतोद्धार में इस ब्राह्मण महिला ने सब कुछ भुला दिया और अपने बेटे के साथ इस आंदोलन में भी जुट गई। कई बार उन्होंने बिस्मिल के आंदोलन के लिए पैसों का इंतजाम किया। वे लगातार लड़ती रही देश के लिए अंग्रेजों के साथ और बेटे को सही साबित करने के लिए समाज के साथ। आखिर में वह मुश्किल घड़ी भी आ गई, जब काकोरी कांड केस में रामप्रसाद को फांसी की सजा सुनाई गई। 19 दिसम्बर, 1927 का दिन फांसी के लिए मुकर्र हुआ। बिस्मिल के पिता ने सोचा कि शायद

मां यह आघात बर्दाशत न कर पाए और अकेले ही बिस्मिल से मिलने जाने का फैसला किया। जब पिता वहां पहुंचे तो पाया कि बिस्मिल की मां पहले ही जेल पहुंच चुकी हैं। मां के साथ क्रांतिकारी शिव वर्मा भी थे। अब संकट था कि शिव वर्मा को अंदर कैसे ले जाया जाए। मां ने हिम्मत जुटाई और कहा यह मेरी बहन का बेटा है। जो क्रांति की भावना उस मां से उसका बेटा छीन रही थी। वह आज भी इस भाव के प्रति कितनी समर्पित थी। मां को देखते ही बिस्मिल रो पड़े। बिस्मिल को रोता देख मां बोली - मैं तो समझती थी कि मेरा बेटा बहादुर है, जिसके नाम से अंग्रेज सरकार भी कांपती है। मुझे पता ही नहीं था कि वह मौत से डरता है। यदि तुम मरने से ही डरते थे तो इस तरह के आंदोलन में बेमतलब ही आए। बिस्मिल ने समझाया कि ये आंसू मृत्यु के डर से नहीं वरन मां के स्नेह से दूर होने की वजह से आंखों में आए। मां ने शिव वर्मा को आगे करते हुए कहा कि अगर कोई संदेश पार्टी तक पहुंचाना है तो शिव को बता दो। गुलाम हिन्दुस्तान की गोद में हजारों बिस्मिल की माएं बिखरी पड़ी हैं। ठीक उन्हीं की तरह उनका नाम कोई नहीं जानता। एक स्पेनिश कहावत के अनुसार एक औंस मां टनों धर्म गुरुओं से कहीं अधिक मूल्यवान है। यह उदाहरण इस कहावत को सही साबित करता है।

जीवन प्रंसग

नैतिक बल

धनबल, बाहुबल, पदबल से भी ऊपर है नैतिक बल तड़क - भड़क, चकाचौंध और अक्रामक व्यवहार केवल दूसरों को प्रभावित करने के लिए ही नहीं होता, उन्हें भयभीत करने के लिए भी उपयोग में लाया जाता है। जो लोग अनुचित आचरण में जीते हैं, वे दूसरों को डराने में अधिक रुचि रखते हैं। गलत लोग यह तरीका अपनाते है कि अपनी बुराइयां दूसरों पर हावी करने के लिए भय की सृष्टी की जाए। रावण इसका उदाहरण था। दूसरों को भयभीत करने की वृत्ति को रावण ने हथियार की तरह इस्तेमाल किया था। जीवन में उसे लगातार सफलता भी मिलती रही। पहली बार उसका गणित तब गड़बड़ाया, जब हनुमान जी उसके सामने थे। सुंदरकांड में प्रसंग आता है। मेघनाद के प्रहार से स्वेच्छा बंधकर हनुमान जी रावण की सभा में खड़े थे। दसमुख सभा दीखि कपि जाई, कहि न जाई कछु अति प्रभुताई।।(हनुमान जी ने जाकर रावण की सभा देखी, उसकी अत्यन्त प्रभुता, ऐश्वर्य कुछ कहा नही जाता) देवता, दिगपाल सभी भयमुद्रा में हाथ जोड़े रावण की भौं ताक रहे थे। इतना आतंक था रावण का। वह सोच भी नहीं सकता था कि कोई उसके सामने निर्भय होकर भी खड़ा रह सकता है। लेकिन उसका ऐसा प्रताप देखकर भी हनुमान के मन में जरा भी डर नहीं हुआ। इस प्रसंग में हनुमान जी अपने आचरण, चरित्र से हमें यही शिक्षा दे रहे हैं कि गलत लोगों से न प्रभावित हों और न भयभीत। धनबल, बाहुबल, पदबल इनके सामने बड़े - बड़े झुक जाते हैं, परन्तु हनुमान जी के पास इन तीनों बलों के ऊपर बल था और वह था, नैतिक बल जिसके सामने इन तीनों को झुकना पड़ता है।

माँ की डायरी

इस संसार में होने वाले मां के समस्त क्रिया-कलाप आज सम्पन्न हो चुके थे। मां से स्नेह रखने वाले सारे रिश्तेदार भी एक-एक करके जा चुके थे। हॉल में रखी तस्वीर में मां मुस्कुरा रही थी, बिल्कुल वैसे ही, जैसे बचपन से लेकर अन्त समय तक मां मुझे देखकर मुस्कुराती थी।

आज मुझे क्या हो रहा था? मां के रहने पर कभी मुझे उनकी उपस्थिति का इतनी शिद्दत से अहसास क्यों नहीं हुआ था, जितना कि आज उनकी अनुपस्थिति से उपजे खालीपन से हो रहा है। आज क्यों मां के आंचल की उस मनमोहक सुगंध का अहसास हो रहा है, जिसकी गंध पाते ही शैशवास्था में मैं मचल पड़ता था। जिस आंचल के साए और तर्जनी मात्र के स्पर्श से अंधेरे, भीड़ के भय और ज्वर की तपन में एक सुकून का अहसास हो जाता था, आज लग रहा है कि वह स्पर्श, वह सुगंध अरसे बाद मेरे वजूद में समा रही है।

आज मेरा शरीर शिथिल हुआ जा रहा था। आज मन को कुछ खटक रहा था। मुझे याद नहीं कि कभी मैंने मां की किसी जरूरत को पूरा न किया हो, कभी मां को पैसों की कमी होने दी हो, कभी मां से ऊंची आवाज़ में बात की हो। फिर भी लग रहा था कि मां को मुझसे कुछ और चाहिए था।

कदम स्वत: ही पिछले तेरह दिनों से बंद पड़े मां के कमरे की तरफ बढ़ गए। बंद दरवाज़ों के खुलते ही जैसे मां जीवन्त हो उठी। पूजा की चौंकी पर विराजमान भगवान और उनके सामने प्रसाद और जल के लिए रखे बर्तन शायद भरे जाने के इंतजार में थे। पीतल की वह छोटी सी घंटी, जिसकी टिन-टिन से पिछले पचास वर्षो से हमारी सुबह आंख खुलती आई थी, शांत हो चुकी थी। मां के कमरे से सटी बालकनी में तुलसी के साथ इतने सारे फूलों के पौधे हैं, मैं आज देख रहा था। टेबल पर रखी डायरी के बीच में खुला पेन पड़ा हुआ था। शायद अन्त समय से पहले मां कुछ लिख रही थी। मेरे भारी कदम स्वत: ही डायरी तक पहुंच गए। बंद डायरी पर मेरे हाथ इस तरह फिरे जैसे बचपन में मां, सिर पर हाथ फेरती थी। 'बेटा विमल, शाम को मेरे लिए एक डायरी ले आना।' अचानक ही कुछ महीनों पहले कही मां की यह बात कानों में गूंज उठी।

'इस उम्र में डायरी का क्या करोगी मां?'

'कुछ विचार मन में उत्पन्न होते हैं, बेटा! सोचती हूं, उन्हें लिख डाला करूं।

शाम डायरी लाकर मैंने अपने बेटे सर्वांग के हाथों मां को भिजवा दी थी। मां उस डायरी पर अपने कौन से विचार लिख रही हैं, यह जानने की फिर मैंने कभी कोशिश नहीं की। शायद मां की जरूरतें पूरी करने मात्र तक मेरी जिम्मेदारी थी।

मां की डायरी का पन्ना मैंने कुछ इस तरह पलटा, जैसे बचपन में मां होमवर्क कराते समय हमारी किताबों के पन्ने पलटती थी।

'प्रिय पौत्र सर्वांग को समर्पित।'

मां की डायरी पर लिखे इस पहले वाक्य ने स्वत: ही दूसरा पन्ना पलटवा दिया।

'बेटा सर्वांग, तू बहुत प्यारा है। हम सब तुझे बहुत प्यार करते हैं। तेरे मम्मी-पापा शायद तुझे मुझसे

भी अधिक प्यार करते होंगे। बेटा, तू जीवन में कभी कुछ ऐसा न करना जिससे उनका दिल दुखे।'

पन्ने पलटने के लिए अब मुझे न शक्ति की जरूरत थी, न सोचने की।

'बेटा, तू सोच रहा होगा कि दादी मां ने ये तो बताया ही नहीं कि मैं ऐसा क्या न करूं कि उनका दिल न दुखे। सर्वांग, बचपन तो सबका एक सा होता है और बचपन की गलतियां भी एक सी होती हैं पर बड़े होने पर इंसान का स्वभाव भी बदलता है और गलतियां के प्रकार भी।

तू अपने पापा के जैसा ही बनना। बस वह गलतियां न करना, जो तेरे पापा ने की हैं। नहीं, नहीं, बेटा, तेरे पापा बहुत अच्छे इंसान हैं। शायद मैंने ही कुछ गलत लिख दिया है। मुझे ये लिखना चाहिए था कि तू वो सब जरूर करना जो तेरे पापा करने से चूक गए। क्योंकि 'न करके' भी गलतियां हो जाती हैं।'

'बेटा, एक उम्र के बाद इंसान के जीवन में बहुत खालीपन आ जाता है। माता-पिता जिन बच्चों की जिम्मेदारी पूरी करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर देते हैं और स्वत: बुढ़ापे में वे खुद उनकी जिम्मेदारी बन जाते हैं, तब एक भय, एक संकोच की भावना जन्म लेती है उनके अंदर कि कहीं हम इन पर भारी तो नहीं पड़ रहे हैं। आवश्यकताएं सीमित हो जाती हैं। जरूरत रह जाती है, तो बस अपनेपन और कुछ पल के साथ की। उसी तरह, जैसे दिन भर उछलकूद करने वाला बच्चा, सोने के समय मां का साथ तलाशता है, वैसा ही सुकून मिलता है बुढ़ापे में मां-बाप को बच्चों का सानिध्य पाकर।

ऐसे ही सानिध्य के लिए तेरी ये दादी का मन तरसता है। सिर्फ कुछ पल का सानिध्य चाहता है मन कि मेरा बेटा मेरे पास हो। क्या करूं, मां हूं उसकी। गोदी में खिलाया है, ऊंगली पकड़ कर स्कूल बस में बिठाया है, रात-रात भर जाग कर परीक्षा में साथ निभाया है। खुश होकर वह गले में बाहें डालकर झूल गया है, तो दुख में गोदी में उसका सिर रख सहलाया है।

आदत पड़ी है, उसके साथ की पर उसे तो बढ़ती उम्र के साथ-साथ पत्नी, बच्चे, संगी-साथी जैसे बहुत से साथी मिलते गए और मां छूटती गई, पर मेरी चाहत तो वैसी ही बरकरार है बेटा।

आज भी उसके ऑफिस से आने के टाइम पर वैसे ही व्याकुल हो उठती हूं, जैसे बचपन में स्कूल से आने के वक्त पर होती थी। बचपन में सीढ़ियों पर चढ़ते कदम के साथ मम्मी.... मम्मी की गुहार सुनने वाले ये कान, आज सिर्फ एक बार, 'मां, कहां हो तुम? सुनने को तरसते हैं। आज तो मां बेटे के बीच संवाद का सेतु तुम और तुम्हारी मां बन गए हो।

कभी-कभी दिल करता है कि उसे डाँटू, जैसे बचपन में डांटती थी, पूरे अधिकार से। पर पता नहीं क्यों हिम्मत नहीं होती पर एक दिन पूछूंगी जरूर कि "मां की तबियत अब कैसी है?" यह अपनी मां से ही पूछने के बजाए अपनी पत्नी से क्यों पूछता है? और कहूंगी कि बेटा, तेरे हाथ का एक हल्का सा स्पर्श अपने माथे पर पाकर ही तेरी मां बिल्कुल ठीक हो जाएगी।

कई बार इच्छा होती है कि तेरे पापा मेरे कमरे में आकर बैठें। कुछ पुरानी बातें करें। हम साथ बैठकर पुराना एल्बम देखें। कभी मुझसे कहें कि उसे भी उसके पापा की याद आती है। जब मुझे तेरे बाबा की याद सताती है तो अपने आंसूओं को रोक नहीं पाती हूं और उस समय यही मन करता है काश मेरा बेटा मेरा कंधा पकड़कर कहता- 'मत रो मां' पर वह

बहुत व्यस्त रहता है, वह भी क्या करे?

मुझे याद है उस दिन उसके आफिस में पैरेंट्स-डे-सेलिब्रेशन था, तो वह कैसे मुझे दो दिन पहले से हिदायतें दे रहा था-'मां चुन कर सबसे अच्छी वाली साड़ी पहनना। मेरी मां सबसे अलग दिखनी चाहिए।' घर से निकलते वक्त जब उसने खुद झुक कर मेरी साड़ी की प्लेट ठीक की, तो मैं उसे निहारती रह गई थी।

महीनों तक बेटे का वह व्यवहार मुझे गुदगुदाता रहा था, सोच सोच कर मुस्कुराती रहती थी। मैं कितना अपनापन भरा व्यवहार था उसका, उन सारी बातों से अलग, जिसमें वह मेरी दवाइयां भी तेरे हाथ से भिजवाता है और बहू से पुछवाता है कि मां का मामा के यहां शादी में जाने का रिजर्वेशन कबका करवाऊं?

बेटा सर्वांग, तू सोच रहा होगा कि दादी मां भी किन बातों को दिल से लगाती हैं। तू अभी नही समझेगा। बुढ़ापा तो पैर की बिवाई है बेटा। अपने पैर में कटती है, दर्द तभी समझ आता है।

कुदरत तुम सबको सदा खुश रखे। जो अपने माता पिता की सेवा करता है, उसे संतान से सुख अवश्य मिलता है। तेरे माता पिता ने हमारी जी जान से सेवा की है, तू उन्हें हमेशा खुश रखना और तू उन बातों का भी जरूर ख्याल रखना, जो मैंने बताई हैं। बेटा, बुढ़ापे का सबसे बड़ा दुश्मन अकेलापन होता है। कुदरत न करे, अगर तेरे पापा-मम्मी में से बुढ़ापे में कोई एक अकेला रह जाए, तब तू उनका ज्यादा ख्याल रखना। दिन भर में दो-चार बार उन्हें इस बात का एहसास जरूर कराते रहना कि घर में उनकी उपस्थिति मायने रखती है। उन्हें 'मां' या 'पापा' कहकर दिन भर से चार-छह आवाज़ें ज़रुर लगा लेना। कानों को अच्छा लगता है बेटा। अपने बच्चे बाल रूप में दिखते हैं, उन संबोधनों के माध्यम से। कभी-कभी मां के गोदी में सिर रखकर लेट जाया करना। जिससे वह अपना वात्सल्य लुटा सके।

बेटा, बचपन और बुढ़ापा एक सा होता है। बचपन में बच्चा मां बाप से डरता है और बुढ़ापे में मां-बाप बच्चों से। बचपन में बच्चा मां बाप से डरता है और बुढ़ापे में मां-बाप बच्चों से। बचपन में बच्चे को मां-बाप की जरूरत होती है और बुढ़ापे में मां-बाप को बच्चों की। पर एक बहुत बड़ा फर्क होता है, बेटा। बच्चा जो चाहता है, हठ करके ले लेता है पर बुढ़ापा अपनी चाहत होठों तक लाने की हिम्मत नहीं जुटा पाता।

मेरे बेटे का हमेशा ख्याल रखना सर्वांग अब तू बड़ा....'

और बस इसके आगे मां को वक्त ने और कुछ लिखने का अवसर नहीं दिया था। डायरी पर लिखे मां के शब्द मेरे आंसूओं से धुल गए थे। मेरी कसक सही थी। मैं मां को वह सब नहीं दे पाया था, जो एक बेटे को मां को देना चाहिए था। मां को भावनात्मक साथ भी चाहिए था मेरा, जो मैं समझ न पाया। अपनी विस्तृत दुनिया के विस्तार में मां को समय देने की याद तक नहीं आई थी कभी मुझे।

अब मन चीत्कार कर रहा था। कलेजा फट रहा था पर कुछ विकल्प नहीं था। अपने को सम्भालना मेरे वश में नहीं था और मैं मां की डायरी को कलेजे से लगा, मां-मां की आवाज लगा कर चीख-चीख कर रो पड़ा।

परिवार में बुज़ुरगों की भूमिका

परिवार की सुख शान्ति को बनाए रखने के लिए बुज़ुरगों की भी अहम भूमिका है। यह जिन्दगी का एक ऐसा पड़ाव है कि जिसमें बुर्ज़ुग न तो परिवार के साथ रह सकते हैं और न ही अकेले। आधुनिक युग में माता पिता अब अधिकतर आर्थिक तौर पर बच्चों पर कम निर्भर हैं। समय और अनुभव ने इतना तो सिखा दिया है कि जब माता पिता अपना सब कुछ बच्चों के हवाले कर देते हैं, तो अकसर बच्चे उन्हें बोझ समझने लगते हैं और अपनी छोटी-छोटी आवश्यकताओं के लिए भी उन्हें बच्चों पर निर्भर करना पड़ता है। परन्तु आर्थिक तौर पर आत्म निर्भर होकर भी माता पिता बच्चों से स्नेह, प्यार और सम्मान की आशा रखते हैं। ज्यों-ज्यों उमर बढ़ती है और बुर्ज़ुग अधिक कोई काम काज नहीं कर सकते तो वह भी चाहते हैं कि बच्चे उनके पास बैठें, उनकी कुछ सुनें कुछ अपनी सुनाएं, परन्तु अकसर बच्चों के पास समय और अच्छे भावों का अभाव होता है, जो वृद्ध उमर को बहुत कष्ट दायक बना देता है।

एक-एक परिवार में बढ़िया नसल का कुत्ता पाला जाता है, तो उसकी खबू देखभाल होती है, उसको बढ़िया से बढ़िया खाना दिया जाता है, क्लीनिक में ले जाया जाता है, परन्तु बुज़ुरगों की अहमियत कुत्ते जैसी भी कई घरों में देखने को नहीं मिलती। बुज़ुरगों की उपयोगिता नहीं, इसलिए उनकी तरफ ध्यान नहीं।

स्वार्थ और अपने सुखों की चाट में अन्ध बच्चों के कारण ही दिन पर दिन ओल्ड-ऐज-होमज़ (बूढ़ों के लिए निवास स्थान) की गिनती बढ़ती जा रही है। उन मां बाप को इन घरों में छोड़ दिया जाता है, जिन्होंने उंगली पकड़ कर बच्चों को चलना सिखाया था, जिन्होंने बच्चों के एक ही सवाल का हजारों बार जवाब दिया था। यदि ऐसा व्यवहार अपने ही बच्चों से बुज़ुरगों को मिलता है, तो यह स्थिति वेदनाजनक तो है ही, परन्तु परिवारों के अच्छे वातावरण को तबाह कर रही है। दीर्घायु कई बार अभिशाप बन जाती है।

यदि देखा जाए तो वृद्धजन, किसी भी सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज की अमूल्य निधि होते हैं, इस अमूल्य निधि की अवहेलना निंदनीय है। इस स्थिति को पैदा न होने देना पारिवारिक जनों का नैतिक दायित्व है। आखिर इन वृद्धजनों ने अपना सम्पूर्ण जीवन उस परिवार पर न्यौछावर किया है और वर्तमान में जो सुख सुविधाएं परिवार भोग रहा है, उस वर्तमान के वह सृजनहार हैं। उनके एहसानों को भुलाकर नई पीढ़ी को कृतघ्न नहीं बनना चाहिए। उनका रोम-रोम उनका कृतज्ञ होना चाहिए, वह आदरणीय हैं, बेशक अपनी उमर के अनुसार वह बिमार, हस्तक्षेप करने वाले उपदेशक ही बन गए हों।

समय के अनुसार बच्चों के विचार बदलते

रहते हैं, परन्तु बुर्जुग उस रफ्तार से नहीं बदलते, परन्तु उन्हें आऊट आफ डेट करार नहीं दिया जाना चाहिए, यह फासला तो सदा से रहा है और आज की नौजवान पीढ़ी का अपने बच्चों से इससे भी अधिक होगा, क्योंकि विश्व में परिवर्तन की गति बहुत तेज हो गई। यदि यह बात युवा पीढ़ी याद रखे तो उनके व्यवहार में अन्तर अवश्य आएगा।

बेशक आज के युग में कामकाजी स्थितियां ऐसी हैं कि संयुक्त परिवार टूट रहे हैं, पारिवारिक जन छोटी-छोटी इकाईयों में अलग-अलग स्थानों पर पलायन कर रहे हैं, अब माता पिता नौकरियों से रिटायर होकर खाली होते हैं तो उनके बच्चे अपनी जीविका के लिए भटकने लगते हैं। वृद्ध अपना बसा बसाया घर और वातावरण छोड़ना नहीं चाहते, कहीं असुरक्षा का डर भी उन्हें सताता है कि यदि अपना सब कुछ छोड़कर वह बच्चों के पास चले गए तो उनको पूरा सत्कार और स्नेह मिल भी पाएगा या नहीं। कई बार अपने बच्चों की पालना के लिए माता पिता को रखना तो चाहते हैं, परन्तु जरुरत पूरी होने पर उनकी अवहेलना करने लगते हैं, जो बहुत दुखदाई स्थिति होती है।

हिमाचल प्रदेश में एक महत्वपूर्ण विधेयक पारित किया गया है कि जो माता पिता बच्चों पर आश्रित हैं, उन्हें कानूनी तौर पर उनका खर्चा वहन करना होगा। पर कानून वृद्धों को राहत नहीं दिला सकता। उन्हें खर्च के लिए राशि ही नहीं, सेवा और सम्मान भी चाहिए। यदि वृद्ध इस संसार से अनाश्रित जाएं, तो परिवार में सुख शान्ति नहीं रह सकती, क्योंकि यही अनादर अगली पीढ़ी को अपने बच्चों से सहना पड़ेगा।

इसमें भी नारी की भूमिका अहम है। नारी पत्नी, बहन, बहू और मां के रूप में सारे रोल अदा करती है। यदि वह यह समझे कि जिस पति पर वह अपना एकाधिकार समझती है, वह पहले अपने माता पिता का बेटा भी है। इसलिए उसके माता पिता के प्रति कुछ कर्त्तव्य हैं। यदि नारी अपना सही रोल अदा करे तो पुरुष उसका सहयोग अवश्य देता है। नहीं तो अकसर पति अपनी पत्नि और माता पिता के बीच के पाटों में पिस कर रह जाता है और घर सदा क्लेश का अड्डा बना रहता है।

बुर्जुगों की भूमिका क्या होनी चाहिए?

यह भी सत्य है कि वर्तमान युग में जीने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ता है। पति और पत्नी दोनों यदि कामकाजी हों तो यह संघर्ष और भी बढ़ जाता है। ऐसे संघर्ष मय युग में बजुरगों की भी भूमिका महत्वपूर्ण है। आज रिटायरिंग उमर में भी माता पिता अच्छी सेहत रखते हैं। रिटायर होने का यह अर्थ नहीं कि बुर्जुग हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाएं। जहां तक सम्भव हो वह अपनी उपयोगिता बनाए रखें। यदि बहू भी कामकाजी है और वह थक कर आती है, तो सास ससुर के प्यार भरे दो शब्द उसकी थकान दूर कर सकते हैं। आने पर यदि सास उसे गर्म चाय वा दूध का प्याला बनाकर दे, तो उसकी थकावट दूर हो जाती है। सवेरे जितना काम बहू कर जाए, कुछ जिम्मेवारी सास अपने ऊपर ले ले और सुसर कुछ बाज़ार के कामों में सहायता कर ले तो सारे परिवार को तनाव से बचाया जा सकता है।

कभी-कभी बच्चों की ज़िम्मेवारी लेकर स्वयं बेटे और बहू को घूमने फिरने के प्रेरित करें तो बच्चे अवश्य कृतज्ञ अनुभव करेंगे और पोते पोतियों से बुर्जुग जितनी निकटता बढ़ा लेवें, उन्हें भावात्मक सन्तुष्टि मिलती है, और बच्चों को अधिक समय माता पिता नहीं दे सकते, दादा दादी अधिक दे सकते हैं।

2-3 वर्ष पहले एक दम्पति ने अपने इकलौते बेटे की शादी की, परन्तु सास जो अच्छी तन्दरुस्त है, उसने आते ही बहू की नौकरी के बावजूद सारे काम का बोझ बहू पर डाल दिया, परिणाम क्या हुआ, चन्द महीनों में ही वह अपने पति को लेकर अलग हो गई। अब सारी उमर के लिए उस नई आई बच्ची को सास ने अपने से दूर कर लिया।

वहीं एक और परिवार के बारे में जानने का अवसर मिला। बहू घर में आई और पूरा एक साल उसने किसी काम की जिम्मेवारी नहीं ली, परन्तु सास ने बहुत सहनशीलता से काम लिया और धीरे-धीरे वह लड़की थोड़ा-थोड़ा काम करते करते अब सारे घर को सम्भाल रही है और वह अपनी सास की बेहद इज्ज़त करती है, वास्तव में उसने कभी काम नहीं किया था और उसने धीरे-धीरे देखकर काम सीखा। बजुरगों के भीतर भी सहनशीलता, स्नेह होना बहुत आवश्यक है। वह अपने अनुभवों को बच्चों पर उपदेशों से लादें नहीं, बल्कि उन्हें स्वयं उनके अनुभवों से लाभ उठाने दें।

बुर्जुगों में भी समझौते की भावना आवश्यक है। बच्चों से ही अपेक्षा न रखें कि सदा वह आपके विचारों के साथ चलें। यह न भूलें कि आपने वर्तमान में जीना है। नई पीढ़ी की सोच के साथ कुछ सामंजस्य बनाएं, अन्यथा परिवार में मिसफिट हो जाऐंगे। जब कुछ बच्चों की जायज़ बातें आप मानेंगे तो उन्हें भी कुछ अपनी मनवाने में सक्षम होंगे।

अकसर देखा गया है कि बड़ों की टोकाटोकी की आदत बन जाती है। समाज की पीढ़ी सीधी टोकाटोकी सहन नहीं करती। कई बार नौकरों की शिकायतें बुर्जुग करते रहते हैं, यदि बच्चे उनके अनुसार कोई ऐक्शन करते हैं, नौकर भाग जाते हैं, और कलह का एक कारण और बढ़ जाता है।

बच्चों के कामों की सराहना करें। बहू की सेवाओं की सराहना करें। यदि किसी ने बिमारी आदि में विशेष सेवा की है तो अपनी तरफ से कोई तोहफा आदि लेकर दें। यदि हम सोचते हैं कि बच्चे माता पिता को तोहफे दें तो यदि बड़ों की आर्थिक हैसीयत है तो वह भी बच्चों को छोटा मोटा ही सही अपने स्नेह के प्रतीक के रूप में तोहफा दें।

छोटे बच्चों से बुर्जुग ज्यादा अपेक्षा न रखें, कभी-कभी छोटे बच्चे अपनी खेलकूद में बड़ों की अवहेलना कर जाते हैं, इसको गंभीरता से न लें, ऐसी बातें बच्चों को भी दूर करती हैं और अपने भीतर भी तनाव पैदा करती हैं।

आजकल सबको एक ही लाठी से नहीं हांक सकते। हरेक के मनोविज्ञान को समझने की आवश्यकता है। इस मशीनी युग में अकसर बड़े शिकायत करते हैं कि बेटा बहू उनके पास नहीं बैठते। इस समस्या से समझौता करें। अपने आपको

पढ़ने, लिखने और कोई काम में व्यस्त रखें। आजकल तो टी.वी. बजुरगों के लिए वरदान है। जब अकेलापन हो तो आप अच्छा कोई प्रोग्राम देखकर उससे मुक्ति पा सकते हैं संक्षेप में

1) आज की पीढ़ी से उचित सीमा तक सहयोग बढ़ाएं

2) अपने विचारों को उदार बनाएं

3) व्यंग्य और डांट फटकार न करें।

4) बिना मांगे राए न दें, यदि आप कोई सलाह देते हैं, और उसको कोई नहीं मानता, तो तनाव पैदा न करें।

5) छोटों की भावनाओं को भी समझने का यत्न करें।

यदि बच्चे और माता पिता अपना आप व्यवहार सुधारने के लिए आत्म समीक्षा करते रहें, तो परिवार में बहार आ सकती है।

सुरजीत बराड़

रुचिका प्रकरण हमारी स्वतन्त्रता पर एक कलंक है।

हमें 1947 में स्वतन्त्रता तो प्राप्त हो गई और इस स्वतन्त्रता के लिए जिन्होंने अपना रक्त बहाया, जेलों की यातनाएं सही, फकीरी की जिन्दगी बसर की उन्होंने स्वतन्त्र भारत का बहुत सुनहरा स्वप्न देखा था। स्वतन्त्र होकर भारतवासी बहुत सकून की जिन्दगी जी सकेंगे, उन पर बाहरी हकूमत का आतंक नहीं रहेगा। यह गांधी का स्वप्न था, यह शहीद भगत सिंह का स्वप्न था, यह सुभाष चन्द्र बोस, जवाहरलाल नेहरू, लाला लाजपत राय और उन सब का स्वप्न था, जिन्होंने जंग में अपनी आहुतियां दी थी। परन्तु क्या उनका स्वप्न लेशमात्र भी पूरा हो सका?

आज भारत विकास करने में अग्रणी देशों में आता है। यह सब भौतिक विकास है, ज्यों-ज्यों कहलाने वाली उन्नति के साधन बढ़ते जाते हैं, त्यों-त्यों भारतीयों का चरित्र गिरता जा रहा है। हम सिर्फ बन्दूकों के साय में ही नहीं जी रहे, बल्कि हमारे नेताओं, हमारे अफसरों के घिनौने षड्यन्त्रों, उनकी नीच वासनाओं, उनके घोटालों के शिकार हैं, और दिन-पर-दिन यह अवस्था बद से बदत्तर हो रही है।

आजकल जो रूचिका प्रकरण चल रहा है, उसका वृतान्त किसी भी शरीफ और ईमानदार आदमी को शर्म से झुकाने के लिए काफी है। पहले तो एक सीनियर अफसर का इस कदर गिर जाना कि अपनी बेटी से भी कम उमर की लड़की की इज्ज़त पर हाथ डालना, फिर अपनी इस घिनौनी हरकत के लिए शर्मिदा होने के स्थान पर उसके बेकसूर परिवार पर जुल्म ढाना, उसके भाई पर झूठे इल्ज़ाम लगाकर उसके कैरीयर को तबाह करना, और परिवार के दुख से दुखी होकर उस बच्ची का आत्म हत्या करने के लिए मजबूर होना, और क्या-क्या जुल्म उस इन्सान ने उस परिवार पर नहीं ढाए, उसकी दासतां रोंगटे खड़े करने वाली है। इससे सारा भारत हिल गया है, ऐसे गुनाहागार को केवल 6 माह की सज़ा सुनाकर उसे बेल दे देनी, यह हालात कितने प्रश्न खड़े करते हैं। सारे भारत का सिर शर्म से झुक गया है। परन्तु खुशी की बात है कि आज भारत

जाग रहा है, चारों तरफ इस अन्याय के विरूद्ध आवाज़ उठ रही है। उन अफसरों, राजनैतिक लीडरों के विरूद्ध भी आवाज़ उठ रही है, जिन्होंने ऐसे भेड़िया इन्सान को बचाने के हर सम्भव प्रयास किए गए। कितनी शर्म की बात है! जिन नेताओं को हम अपने रहनुमा बनकर हम संसद कें वा विधान सभाओं में भेजते हैं, वह हमारी ही बच्चियों की आबरू पर हाथ डालने वाले राक्षसों को संरक्षण देते हैं, इससे बढ़कर अधोगति हमारे देश की क्या हो सकती है?

सजा सुनने के बाद राठौर साहिब जिस प्रकार मुस्कराते हुए कोर्ट से बाहर आ रहे थे, उससे तो लगता था कि जैसे वह हमारी न्याय प्रणाली का भी मज़ाक उड़ा रहे हैं। उस परिवार का क्या दशा होगी, जिन्होंने 19 वर्ष न्याय के लिए लड़ाई लड़ी, दुख सहे, अपमान सहे, घर से बेघर हो गए, अपने बेटे का कैरियर तबाह होते हुए देखा, परन्तु इतने वर्षों के बाद गुनाहगार मुस्कुराते हुए, उनका मज़ाक उड़ाते हुए निकल गया। यह हालात हमारी न्याय प्रणाली पर भी ईशारा करते हैं कि एक लड़की को अपने साथ अन्याय होने पर न्याय मिलने में 19 वर्ष लगें?

आखिर यह अन्याय क्यों है? इसलिए कि हमारी समाज में एक राठौर नहीं, जगह-जगह लड़कियों को नौकरियां देने के लालच में, उन्हें तरक्की देने के लालच में राठौर ही राठौर नज़र आएंगे। या तो पैसा देकर, या पुलिस को अपने हाथ में करके, अपने पैसे और ताकत के ज़ोर पर ऐसे केस दबा दिए जाते हैं, या न्याय न मिलने की आशा से, या समाज में बेईज्ज़त होने के डर से, ऐसे केस किए ही नहीं जाते। जब तक अपराधियों को जल्दी से जल्दी कड़ी सजा देने का प्रावधान नहीं होता, तब तक अपराध बढ़ते रहेंगे और आम आदमी इस अन्याय की चक्की में पिसता रहेगा।

आनन्द प्रकाश जी और उनकी बेटी अराधना हमारे सम्मान के पात्र हैं, जिसने इतने वर्षों तक यह लड़ाई लड़ी और सलाम है उसके पति को, उसके परिवार को, जिन्होंने खतरों की परवाह न करते हुए, अन्याय के विरुद्ध लड़कर जोख़िम उठाया।

भारत भौतिक उन्नति कितनी भी कर जाए, लेकिन यदि चरित्र का पतन इसी प्रकार होता रहा , तो हम ज्वालामुखी पर्वत के मुहाने पर खड़े हैं, जो फटकर सब कुछ तहस नहस कर देगा। इसी प्रकार भारतवासी, आम जनता जागेगी, तो सुधार अवश्य होगा।

सुरजीत बराड़

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*

म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts